रजि. नं. पी.बी./जे.एल–/0011/2012-14 RNI No. 26281/74

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

वर्ष–73, अंक : 39, 22-25 दिसम्बर 2016 तदनुसार 11 पौष सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

23 दिसम्बर बलिदान दिवस पर विशेष...

निर्भीक सन्यासी – स्वामी श्रद्धानन्द

–ले.–श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

वैदिक धर्म की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का नाम और उनके द्वारा किए गए कार्य हमेशा आर्य जगत् के लिए प्रेरणा के स्रोत रहेंगे। स्वामी श्रद्धानन्द जहाँ कर्मक्षेत्र के अद्वितीय योद्धा थे, वहां वे एक सफल लेखक और साहित्यकार भी थे। कर्मठता एवं बौद्धिकता का ऐसा समन्वय प्राय: बहुत कम लोगों में दिखाई देता है। स्वामी श्रद्धानन्द जिनका पूर्व नाम मुन्शीराम था, भारत माता के सच्चे सपूत थे, जिन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्र की सामाजिक,धार्मिक एवं राजनीतिक दशा सुधारने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी आर्य समाज एवं महर्षि की मान्यताओं के प्रचार व प्रसार में तन-मन-धन, मनसा वाचा कर्मणा कटिबद्ध हो गए। स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रारम्भिक जीवन मुन्शीराम के रूप में अनेक प्रकार के कुव्यसनों से परिपूर्ण था जिसका वर्णन उन्होंने स्वलिखित आत्मकथा कल्याण मार्ग का पथिक नामक पुस्तक में किया है। प्राय: देखा जाता है कि हर व्यक्ति अपने जीवन के उज्जवल पक्ष को दुनिया के सामने रखता है परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने जीवन की अच्छी या बुरी किसी भी घटना को छुपाया नहीं है। युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सान्निध्य ने मुन्शीराम का जीवन ही पूर्णरूपेण बदल डाला। एक नास्तिक तथा भ्रष्ट पथ के अनुयायी को स्वामी दयानन्द जी के प्रथम दर्शन ने ही अगाध आस्तिक बना दिया तथा मुन्शीराम के जीवन में ऐसी जीवन शक्ति का संचार हुआ कि आगे चलकर वह समस्त विश्व का पथ प्रदर्शक बन गया। कृण्वन्तो विश्वमार्यम का सिंहनाद करने वाला वह बहादुर सेनानी करनी और कथनी में भेद नहीं मानता था। जब उसने आर्य समाज की मान्यताओं की प्रतिस्थापना समस्त धरती पर करने का संकल्प लिया तो अपने गुरू दयानन्द की तरह सच्चा सैनिक बनकर निकल पड़ा और इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी सफलताओं का मानदण्ड स्थापित कर दिया। स्वामी दयानन्द जी के उपरांत आर्य समाज की सफलताओं में चार चांद जिन अमर बलिदानियों ने लगाए उनमें भी स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्थान नि:संदेह सर्वोपरि है। यथा नाम तथा गुण कहावत को चरितार्थ करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द श्रद्धा एवं आनन्द की साक्षात् मूर्ति थे। सारा संसार उनका अपना था और सारे संसार की भलाई के लिए उद्यत रहते थे। वैदिक धर्म के प्रचार के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अनेक कदम उठाए।

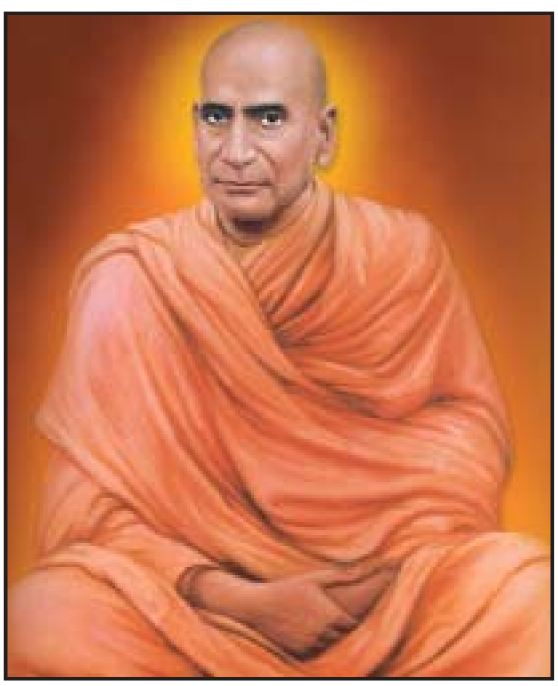

स्वामी श्रद्धानन्द जी की आस्था थी कि राष्ट्र एवं समाज का सुधार तभी सम्भव है जब राष्ट्र के भविष्य बच्चों का सुधार किया जाए। इसी आस्था से अभिभूत होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित शैक्षिक सिद्धान्तों हेतु गुरूकुल खोलने की बीड़ा उठाया। संसार प्रसिद्ध गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय इस बात का साक्षी है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन कितना तपस्वी, त्यागमय, निष्ठामय था। भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के इस अनन्य उपासक ने गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्र को जो संस्था समर्पित की है, वह भारत राष्ट्र का एक गौरव है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आन्दोलन को भी जन्म दिया। यह आन्दोलन न केवल धार्मिक था, अपितु इसके पीछे राष्ट्रीय एकता की दूरदर्शिता काम कर रही थी। स्पष्ट था कि मुस्लिम तथा ईसाई मतों के प्रचार-प्रचार के नाम पर देश में राष्ट्रीयता विरोधी तत्व तथा भावनाएं पनप रही थी। अंग्रेज शासक इन्हें अपने साम्राज्यवादी प्रयोजनों की सिद्धि के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जैसा महारथी किसी लौकिक शक्ति का मुंह देखकर अपनी आत्मा की पुकार को दबाने वाला नहीं था। उन्होंने तथाकथित देशभक्त लोगों का रोष एवं क्षोभ मोल लेकर भी शुद्धि आन्दोलन को तीव्र किया। हजारों की संख्या में मुसलमान एवं ईसाईयों को वैदिक धर्म में दीक्षित करके भारतीय संसकृति का उपासक बनाया।

23 दिसम्बर को महान् बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने धर्म के मार्ग पर चलते हुए वैदिक धर्म की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया था। आज स्वामी श्रद्धानन्द जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो पथ उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्त काल तक सारे संसार को प्रेरणा देता रहेगा। आज हम आत्मनिरीक्षण करें कि क्या हम वास्तविक रूप में उस अमर बलिदानी को श्रद्धाजंलि देने के अधिकारी हैं, जिसने वेद के मार्ग पर तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करने के लिए अपनी संपति ही नहीं अपने जीवन की भी आहुति दे दी। आईये हम भी उस महान् बलिदानी को उसके बलिदान दिवस के अवसर पर शत्-शत् नमन करते हुए आर्य समाज की उन्नति का संकल्प लें।

निर्मल, स्वच्छ, शुचि जीवन का दाता दीजै शुभ वरदान

ले०-प्रो० ओम प्रकाश आर्य 1607/7, जवहार नगर, पटियाला चौक, जींद

जीवन में आचरण विषयक निर्मलता, स्वच्छता और शुचिता, जिसे दूसरे शब्दों में प्रायश: पवित्रता कहा जाता है मनुष्य की सर्वाधिक प्रशंसनीय विशेषता ही नहीं प्रत्युत् उसकी अनमोल सम्पत्ति भी है जो कि उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता का एकमात्र सुदृढ़ आधार है। ऐसी पवित्रता, ऐसा पाक, साफ आचरण सबको काम्य है किंतु प्राप्त उसी को होता है जिसके पास पूर्व जन्मों के अच्छे संस्कारों की पर्याप्त जमा पूंजी है और वर्तमान में जो शास्त्रोक्त जीवन पद्धति को सर्वतोभावेन अपनाता है। ऐसी जीवन पद्धति एक कठोर साधना है जिसमें कई भिन्न-भिन्न साधन शामिल हैं, जैसे यम, नियमादि (अष्टांग योग) ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासनादि जिनको ईश्वर की भक्ति कहा जाता है। महर्षि दयानन्द ने इन सभी के अलग-अलग लाभ और फल बतलाये हैं, यथा-स्तुति से हमें निरहंकारता और निरभिमानता प्राप्त होती है। प्रार्थना तब करनी चाहिये जब हम पूर्ण ईमानदारी से किसी पदार्थ या लक्ष्य को पाने के लिए अपने सकल सामर्थ्य से पूरा पुरुषार्थ कर चुके हों फिर भी न्यूनता रह गई हो तो तदुपरान्त प्रार्थना करें, परमेश्वर अवश्य सुनेगा। जो श्रम करके थका नहीं, उसकी प्रार्थना कभी स्वीकृत नहीं होती। कहा भी है-**नाश्रान्ताय श्रीरस्ति।** और सच्ची प्रार्थना से क्या कुछ मिल सकता है इसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। अंग्रेजी का एक उदाहरण है कि More things are wrought by prayer than the world dreams of.

उपासना से अभिप्राय है कि ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को यथा सामर्थ्य अपने में धारण करना, जिससे उस सच्चिदानन्द के अनन्त आनन्द की किञ्चित् सी अनुभूति हम भी कर सकें। और इन सबका एक आम प्रचलित नाम भक्ति है। उस सच्ची भक्ति से हमें इतना आत्मिक बल प्राप्त होता है कि हम पर्वत समान संकट को भी राई समान नगण्य समझकर हंसते-हंसते सह जाते हैं, कभी घबराते नहीं, विचलित नहीं होते। लेकिन ऐसा कर पाना तभी संभव है जब हमें मन, बुद्धि, आत्मा की अर्थात् आन्तिरिक पवित्रता प्राप्त हो, अन्यथा हम ऐसा कभी नहीं कर पायेंगे। यूं भक्ति, उपासना, साधनादि तो हम सब करते हैं, किंतु मात्र औपचारिकता निभाना, लकीर पीटना एक बात है वास्तविक भक्ति करना, अपने अन्तर्मन को सच्चे अर्थों में पवित्र करना दूसरी बात है। शास्त्रोक्त मार्ग को अपनाये बिना आंतरिक पवित्रता की प्राप्ति कठिन ही नहीं असंभव है।

वेद ने शुचिता, स्वच्छता, पवित्रतादि की प्राप्ति का एक सरल सा उपाय बताया है जो ईश्वर की सच्ची आराधना और उपासना पर आधारित है और पवित्र करने के लिए पवित्रता के उच्चतम आदर्श, पवित्रता के स्त्रोत परमपिता परमेश्वर को इसी प्रकार से पुकारने की आवश्यकता है जैसे भक्त अग्रलिखित मंत्र में पुकार रहा है-

ओं इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय।

त्वामवस्युरा चके स्वाहा।। ऋ. 1.25.19

और आंतरिक तथा बाह्य पवित्रता प्राप्ति की कामना हमें मिलती है अथर्ववेद के एक अत्यन्त लघु 'पवमान सूक्त' में जिसमें मात्र तीन मंत्र हैं, यह सूक्त है काण्ड 6 का 19वां सूक्त जो इस प्रकार है-

ओं पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसो धिया।

पुनन्तु विश्वा भूतानि पवमान: पुनातु मा।। -अथर्व. 6.19.1

ओं पवमान: पुनातु मा क्रत्वे दक्षाय जीवसे अथो अरिष्ट-तातये।। -अथर्व. 6.19.2

ओं उभाभ्यां देव सवित: पवित्रेण सवेन च। अस्मान्पुनीहि चक्षसे।। -अथर्व. 6.19.3

इन मंत्रों में शुचिता, स्वच्छता, पवित्रतादि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर को पुकारा गया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि अन्दर बाहर की पवित्रता पाना अंतिम साध्य नहीं है बल्कि वह तो साधन है अपने पुरुषार्थ, अपने बल, अपने कृत्य, अपने आचरण और अपने समस्त जीवन को पवित्र (पाक, साफ) बनाने का, फिर उसके माध्यम से स्वयं तथा अन्यों को सुख पहुंचाने का। उपर्युक्त सभी मन्त्र पवित्र जीवन अथवा जीवन में पवित्रता की महती आवश्यकता पर जोर देते हैं। किंतु अंतिम मंत्र (अथर्व. 6.19.3) तो बहुत ही पते की बात कहता है। इस मंत्र में ज्ञान और कर्म की पवित्रता और एकरूपता की आवश्यकता बताई गई है और इंगित किया गया है कि पवित्र कर्मों के बिना पवित्र ज्ञान किसी काम का नहीं और पवित्र ज्ञान के अभाव में पवित्र कर्मों की कल्पना मात्र कोरी कल्पना ही है। आज का सारा वातावरण, आसपास में घटित हो रहे सारे शर्मनाक काण्ड इसी तथ्य का कच्चा चिट्ठा, मुंह बोलते उदाहरण हैं कि न आज के मनुष्य का ज्ञान पवित्र है, न कर्म, दोनों इस कदर अपवित्र हो गये हैं कि अपवित्रता भी इनके सामने पवित्र प्रतीत होती है। यह आज के मानव का भीतर का पाप, कलुष एवं किल्विष ही है जो बाहर जघन्य अपराधों, बेहद शर्मनाक काण्डों के रूप में रोज-रोज बाहर आ रहा है। दुनियां के किसी भी देश में ऐसी शर्मनाक घटनायें नहीं होनी चाहियें पर सर्वाधिक दु:खद सत्य तो यह है कि वर्तमान में ज्यादातर काले कारनामे (चाहे आर्थिक हों, सैक्स संबंधी हों या कानून व्यवस्था संबंधी हों, अन्य प्रकार के भी) उस धरती पर देखने को मिल रहे हैं जो राम, कृष्ण जैसे महापुरुषों की जन्मभूमि है। ऋषियों, मुनियों, साधु, महात्माओं और सच्चे गुरुओं की तपस्थली रही है। जिसके पास नैतिकता, सदाचार, पवित्रता, उच्च नैतिक मूल्यों और महान् परम्पराओं का एक लम्बा इतिहास तथा विपुल वैभव विद्यमान है तो फिर भी यह ह्रास और पतन क्यों हो रहा है ? क्यों हम कदाचार के कर्दम में धंसे जा रहे हैं ? क्यों हमारा चारित्रिक पतन थमने का नाम नहीं ले रहा ? उत्तर मात्र और मात्र एक ही है कि हमने ईश्वर की सच्ची भक्ति का परित्याग कर लिया है। वास्तविक निर्मलता, शुचिता, स्वच्छता और पवित्रता देने वाले परमपिता परमेश्वर से हम विमुख हो गये, उस सच्चे पतितपावन मित्र को हमने छोड़ दिया है और परिणाम वही हुआ है जो इस वेद मंत्र ने सृष्टि के आदि में ही बता दिया था-

ओं यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति। यदीं श्रृणोत्यलकं श्रृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्।।

-ऋ. 10.71.6

हमने पाप नाशक, पवित्रता प्रदायक परमात्मा और उसके पवित्र वेद ज्ञान से किनारा कर लिया है, फलस्वरूप हमारी प्रमाणिकता और विश्वसनीयता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। हमारा सुना हुआ सब व्यर्थ, बोला हुआ व्यर्थ और किया हुआ व्यर्थ ही नहीं घोर अनर्थकारी बनता जा रहा है। उसको छोड़ दिया जो-

यशसागतेन सभासाहेन... किल्विषस्पृत् -ऋ. 10.71.10

यश प्रदायक, सभाओं में सम्मान प्राप्त कराने हारा और पूर्णतया पापनाशक है। महर्षि दयानन्द ने इसी उद्देश्य से पञ्च महायज्ञों (विशेषकर ब्रह्मयज्ञ और देव यज्ञ) का विधान किया था कि हम-

ओं विश्वानि देव सवित-र्दुरितानि परासुव....

-यजु. 30/3

ओं. ऋतञ्च सत्यञ्च.........

ओं समुद्रादर्णवाधि संवत्सरो अजायत....

ओं सूर्यायन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्...

-ऋ. 10/190/1-3

आदि अघर्मषण मंत्रों के माध्यम से हम समस्त दुरितों और पापों का निराकरण कर सकें तथा अन्दर बाहर की निर्मलता, निष्पापता, शुचिता, पवित्रतादि प्राप्त कर सकें जिससे कि हम, हमारा समाज, राष्ट्र और समूचा विश्व पापमुक्त हो कर सुख, शांति, आनन्द से रह सके। इसलिए समस्त विश्व को सारे पूर्वाग्रह छोड़कर मत, पन्थ, मजहब, सम्प्रदायादि के संकीर्ण दायरे से बाहर निकलकर ईश्वर भक्ति की वेदोक्त सरणी को अपनाना होगा। पापनाशक, पवित्रता प्रदायक परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करनी होगी, उसी से पुकार लगानी होगी। निर्मल, स्वच्छ, शुचि जीवन का दाता दीजै शुभ वरदान, जिससे हो सबका कल्याण और यह धरा बन सके स्वर्ग समान। वेद की शरण में आये बिना न सच्ची भक्ति समझ में आयेगी, न कलुष, किल्विष दूर हटेंगे, न शुचिता और निष्पापता हमें प्राप्त होगी और उनके अभाव में हम कभी सुखी नहीं हो सकेंगे। आइये हम पूरी श्रद्धा और ईमानदारी से यह प्रार्थना करें-

पवित्र भाव जन जन में भर दो,
हे परम पवित्रता के आगार।
ज्ञान, कर्म दोनों हों पवित्र,
जिससे सुख पावे संसार।।
पवित्र बल, बुद्धि, पुरुषार्थ,
सबको देना होगा दयानिधान।
निर्मल, शुचि, निष्पाप जीवन का,
दाता दीजै शुभ वरदान।।

सम्पादकीय......

कल्याण मार्ग के अद्वितीय योद्धा-स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द जी का नाम लेते ही एक समर्पित और क्रियात्मक जीवन उभर कर सामने आता है। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा को कल्याण मार्ग का पथिक नामक शीर्षक देकर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है। उन्होंने अपने प्रारम्भिक जीवन की कटु यथार्थता तथा मंगलोन्मुख होने की कहानी को प्रस्तुत किया है। सामान्य मनुष्यों के लिए अपने जीवन के कालिमावाले पृष्ठों का उद्घाटन करना, अपनी कलंक-गाथा को औरों के सामने प्रस्तुत करना कठिन होता है, परन्तु संसार के महापुरूष किसी और ही धातु के गढ़े होते हैं। मुंशीराम जी के जीवन की यह कथा उन सभी लोगों के लिए प्रेरणा और उदाहरण प्रस्तुत करती है जो अपने कदाचारों से मुक्ति प्राप्त करना चाहते हैं, किन्तु आत्मिक दुर्बलता तथा मानसिक अदृढ़तावश ऐसा करने में कठिनाई महसूस करते हैं।

इस महामानव के जीवन की कहानी बड़ी विचित्र, विस्मयकारक और प्रेरणादायक है। किस प्रकार दोषपूर्ण जीवन में आकण्ठ डूबा हुआ एक धनी परिवार में उत्पन्न सर्वथा निर्व्यसनी बन कर देश का सर्वमान्य नेता बना। यह सचमुच अपने आप में अद्भुत और अनोखी बात है। कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धाजंलि भेंट करते हुए कहा था कि-श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में अगाध श्रद्धा है। श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। वे नित्य प्रति श्रद्धावान थे और उसी में आनन्द मनाते थे। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गए थे। सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था। उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई एक प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन इस बात का साक्षी है कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चय करके किसी उद्देश्य के लिए जुट जाता है तो वह अवश्य ही सफल होता है।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के बलिदान के बाद उन के द्वारा स्थापित आर्य समाज में बलिदान की भावना उजागर हुई और बलिदान की परम्परा भी इस के साथ ही आरम्भ हो गई। क्योंकि महर्षि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने व्याख्यानों में उपदेशों और ग्रन्थों में देश जाति व समाज के कल्याणार्थ आत्मोत्सर्ग की भावना जन-जन में पैदा कर दी थी। महर्षि के पश्चात यह परम्परा आज तक चली आ रही हैं। महर्षि के पश्चात अनेकों नौजवानों और आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं ने देश की आजादी के लिए अपने बलिदान दिए। इसी श्रृंखला में पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना बलिदान दिया। महर्षि दयानन्द जी ने जिन आदर्शों तथा देश जाति व समाज सुधार के कार्यों को आरम्भ किया था, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें मूर्त्त रूप प्रदान करने के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी मुन्शीराम के रूप में जब एक नौजवान थे तो उन्होंने महर्षि के ओजस्वी व्यक्तित्व को देखा था, उनके बहुत समीप से दर्शन किए थे और उनसे वार्तालाप भी किया था। आत्मा, परमात्मा, प्रकृति और धर्म आदि गूढ़ विषयों पर उनके तर्कपूर्ण प्रवचन सुने थे। मुन्शीराम जी के जीवन में महर्षि के उपदेशों का इतना अमिट प्रभाव था कि आगे चलकर वही मुन्शीराम एक विश्व विख्यात सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाने व वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार करने का संकल्प लिया था और अपने जीवन व व्यक्तित्व को तपस्वी, कर्मठ बना कर वैदिक धर्म की सेवा में समर्पित कर दिया था। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक व शैक्षणिक समस्त क्षेत्रों में जागृति पैदा कर दी थी। महात्मा मुंशीराम सन्यासी बन कर स्वामी श्रद्धानन्द बन गए तो उन्होंने जिस गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना महर्षि दयानन्द के आदर्शों को पूरा करने के लिए की थी उसे भी छोड़ दिया क्योंकि उनका लक्ष्य महान था और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उनके अन्दर अगाध श्रद्धा थी। इसीलिए उन्होंने गुरूकुल से बाहर रहकर देश जाति व समाज के लिए कार्य करने शुरू कर दिए थे।

महर्षि दयानन्द के साक्षात् से उन्हें अन्तर्ज्योति की प्राप्ति का उपदेश मिला। ऋषि के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का श्रद्धापूर्वक अध्ययन किया और तदनुसार आचरण करने में प्रवृत हुए। महात्मा मुन्शीराम जी श्रद्धा की साक्षात् मूर्ति थे तभी तो महर्षि के विचारों को स्वीकार करने के पश्चात उनको अपने जीवन में पूर्ण रूप से हर पग पर तथा प्रत्येक क्षेत्र में निभाया। कहां वकालत का व्यवसाय और कहां स्वाध्याय के बल पर अपने शास्त्रों का गहरा ज्ञान उन के धर्मोपदेश जहां जीवन में साकार रूप थे, वहां स्वयं प्राप्त शास्त्र योग्यता को भी स्पष्ट करते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें लिखीं। हर अवसर पर सत्य को अपनाकर श्रद्धा को साकार किया और अपने सन्यास आश्रम के श्रद्धानन्द नाम को सर्वथा चरितार्थ किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज धुन के धनी, दृढ प्रतिज्ञा सत्यनिष्ठ, आर्य जाति के सपूत, वैदिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत तथा गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरूद्धारक थे। अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अद्भुत व चमत्कारिक व्यक्तित्व के धनी थे। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में इतनी वीरता और लोकप्रियता दिखाई थी कि ब्रिटिश शासन कांप उठा था।

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाते हुए हम सभी उस महान् बलिदानी के पद्चिह्नों पर चलते हुए आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें। स्वामी श्रद्धानन्द सम्पूर्ण जीवन आरम्भ से लेकर अंत तक प्रेरणादायक रहा है। अगर कोई व्यक्ति अपने जीवन को पतन से उत्थान की ओर लेकर जाना चाहता है तो वह स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित स्वआत्मचरित कल्याण मार्ग का पथिक अवश्य पढ़े और उनसे प्रेरणा लेकर जीवन में आगे बढ़े।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

दो वेद–मंत्र युवाओं के लिये

-ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखाधिकारी (म. प्र.)

1. ओ३म्। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद भद्रं तन्न आसुव।

2. ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।

प्रथम मंत्र महर्षि का सर्वाधिक प्रिय मंत्र है। वेद भाष्य में अनेक बार इस मंत्र का उल्लेख किया है। दूसरे मंत्र को चारों वेद के बीस हजार से भी अधिक मंत्रों में प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसे गायत्री मंत्र, गुरूमंत्र और महामंत्र भी कहा जाता है।

यह लेख न तो विद्वानों को और न ही वृद्धजन को दृष्टिगत रखकर लिखा गया है। प्रथम मंत्र में आए 'दुरितानि' शब्द का अर्थ महर्षि दयानंद ने दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख बताया है। दुर्गुण और दुर्व्यसन के पराभव की प्रार्थना युवावस्था में ही की जानी चाहिये। वृद्धावस्था में इनके दूर करने की प्रार्थना कोई अर्थ नहीं रखती। दुःख से मुक्ति की प्रार्थना किसी भी आयु में की जा सकती है। दूसरे मंत्र में बताया गया है कि कौन इन दुरितों को दूर करने की सामर्थ्य रखता है ? वह कौन है और उसकी सामर्थ्य कैसी है ?

प्रथम मंत्र का सरल भाषा में अर्थ है–हे देव ! हे सविता ! आप हमारे दुरितो–दुर्गुणों, दुर्व्यसनों और दुःखों को दूर कीजिये और जो भी अच्छे गुण, कर्म और स्वभाव है, उन्हें प्राप्त कराईये।

दूसरे मंत्र का अर्थ है–हे प्राणस्वरूप, दुःखहर्ता और व्यापक आनंद के देने वाले प्रभु ! आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक है। हम आपके उस पूजनीय पाप विनाशक तेज (भर्ग) का ध्यान करते हैं, जो हमारी बुद्धियों को प्रकाशित करता है। हे पिता ! आपसे हमारी बुद्धि कदापि विमुख न हो। आप हमारी बुद्धियों को सदैव सत्कर्मो में प्रेरित करें, ऐसी प्रार्थना है।

महर्षि दयानंद गायत्री मंत्र का प्रतिदिन एक हजार बार अर्थ सहित जाप करने का उपदेश करते थे। आशय यही होगा कि यह मंत्र व्यक्ति के दिलो–दिमाग पर छा जाए, स्थायी रूप से स्मृतिपटल पर अंकित हो जावे और जब भी मनुष्य दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख में फंसे अथवा जीवन के झंझावातों में अध्ययनकाल से लेकर कार्यक्षेत्र में उतरने पर भी यदि कोई संकट आवे, तो परमात्मा उसकी रक्षा करे।

दोनों मंत्रो में ईश्वर की पहिचान बताई गई है। ओ३म् उसका निज नाम है। इस नाम में उसका स्वरूप और उसकी तीनों शक्तियों–सृष्टि निर्माण, पालन और प्रलय का समावेश है। देव–सब सुखों का देने वाला। सविता–सब जगत का उत्पत्तिकर्ता और सब ऐश्वर्यों का दाता। भूः–सब चेतन जगत के जीवन का आधार अर्थात् प्राण। भुवः–सब दुःखों से रहित व इनसे बचाने वाला है। स्वः–सब जगत् को व्यापक होकर धारण करने वाला अर्थात् नियमों में बाँध रखने वाला। ऐसा ईश्वर ही 'वरेण्यं'– वरण करने वाला अर्थात् 'मानने' योग्य है और उसी से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें बुरे मार्ग से छुड़ाकर सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा (प्रचोदयात्) दे।

उपरोक्त गुणों–शक्तियों से सम्पृक्त ईश्वर ने 'आत्मा' को मानव शरीर दिया है। इस शरीर को छैः तत्वों–काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद (नशा–अहंकार) और मत्सर (ईर्ष्या–द्वेष) से संजोया है। प्रत्येक मानव में इनका भिन्न अनुपात उसके स्वतंत्र–पृथक अस्तित्व को दर्शाता है। मानवीय क्रिया को गति देने वाली शक्ति– Creative/moving force ये ही तत्व हैं। यह भी यथार्थ है कि समस्त दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःख के भी ये ही तत्व कारण हैं। इसीलिये शास्त्रकार इन्हें छैः शत्रु मानते हैं, क्योंकि ये ही तत्व उसे श्रेय मार्ग से हटाकर, प्रेय मार्ग में ही उलझाए रखते हैं। श्रेय मार्ग आत्मा की मोक्ष प्राप्ति का मार्ग। प्रेय मार्ग सांसारिक क्रिया–कलापों में विचरने का मार्ग।

ईश्वर काम कैसे करता है ?– बुद्धियों–ब्रेन पॉवर–मस्तिष्क की शक्तियों को बढ़ाकर, विवेक देकर–सही गलत की पहिचान बताकर। इस विवेक को प्राप्त करके भी यदि मानव त्रुटि करता है, पाप करता है तो वह उसके मस्तिष्क में, गलत काम न करने के लिये भय–डर पैदा करता है। काम करना चाहिये या नहीं करना चाहिये की शंका पैदा करता है। यदि इन दोनों चेतावनियों की भी वह अनसुनी करता है तो निषिद्ध कर्म करने के पश्चात् दुष्परिणाम– स्वरूप प्राप्त लज्जा (शर्म) से भी अवगत कराता है।

कुछ प्रमुख दुगुर्णों, दुर्व्यसनों, दुःखों का संक्षिप्त विवरण विषय को स्पष्ट करने के लिये आवश्यक है–

भ्रष्टाचार मानव जीवन का सर्वभक्षी दुर्गुण बन गया है। जीवन के सभी क्षेत्रों में यह घुन की तरह घुस गया है। मुख्यमंत्री, उच्चत्तम प्रशासनिक पद पर आसीन अधिकारी, सेनाधिकारी, न्यायाधीश बड़े–बड़े उद्यमी, धन्नासेठ व्यापारी इस दुर्गुण में लिप्त पाये जाने पर जेल की यातना, सामाजिक प्रतिष्ठा खोने पर लज्जित जीवन झेले चुके हैं या झेल रहे हैं।

अभी हाल ही में दो प्रकरण सामने आये हैं। डी. जी. पद पर पदस्थ वरिष्ठतम आई. ए. एस. अधिकारी बी० के० बंसल, नौ लाख रूपये की रिश्वत लेते हुए, सी. बी. आई. द्वारा गिरफ्तार किये गये। आसन्न अपमान, मानसिक पीड़ा से बचने के लिये पहिले पत्नि और पुत्री ने आत्महत्या की। कड़ी पूछताछ के कारण, बचने की आशा न देख पिता और पुत्र ने भी आत्महत्या कर ली। दिल्ली की एक महिला सीनियर जज चार लाख की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ पकड़ी गई।

दुर्व्यसनों में सिरमौर हैं–शराब, मादक पदार्थ–चरस, हशीश और ड्रग्स का सेवन। उन्मुक्त कामवासना की अनाधिकृत तृप्ति व्यभिचार है। वेश्यागमन पहिले से ही अस्तित्व में है और अब रात–रात भर चलने वाली रेव पार्टियों, डाँस–बारों में यही सब कुछ तो होता है। शराब और शवाब के भीषण दुष्परिणामों से बचाने के लिये परमात्मा की चेतावनियाँ भय, शंका और लज्जा ही काम कर सकती हैं। स्थाई समाधान दे सकती हैं। मानवीय दण्ड विधान विवेक जाग्रत नहीं करता और नहीं हृदय परिवनर्तन करता है। फिर भी देखा यह जाता है कि इन व्यसनों में ग्रस्त अधिकांश लोग, मानवीय कमजोरियों के चलते, घुटने टेक देते हैं।

दुःख के कारण और प्रकाश की सूची अंतहीन है और इनसे प्राप्त पीड़ा भी अकल्पनीय और सीमातीत है। इनमें एक प्रमुख कारण पूर्व जन्मों के संचित कुकर्म हैं।

लेख की सीमा और उद्देश्य का ध्यान रखने के कारण यदि प्राकृतिक आपदाओं से प्राप्त दुःखों एवं व्यक्तिगत शारीरिक और मानसिक रोगजनित पीड़ा का विचार करना छोड़ दें तो क्रियात्मक रूप में दुःख देने वाले और दुःख झेलने वाले दोनों ही मनुष्य हैं। पूर्व वर्णित छैः में से एक अथवा अधिक शत्रुओं से ग्रसित मनुष्य ही दुःख का कारण बनता है।

दुःखों का निवारण और कामनाओं की पूर्ति ईश्वर करता है पर कब ? महर्षि दयानंद के अनुसार जब पूर्ण पुरूषार्थ–पूरी मेहनत और लगन के साथ प्रयत्न करने पर भी सफलता न मिले तब। दुःख/कष्ट/संकट निवारण का ईश्वरीय तरीका भी अद्भुत होता है। किसी भी रूप में अप्रत्याशित सहायता देकर, विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाकर, धैर्य से उनका सामना करने का आत्मिक बल देकर।

आज का युवा वर्ग बेरोजगारी के कारण अत्याधिक पीड़ादायक मानसिक यंत्रणा झेल रहा है। उसकी जिन्दगी 'भटकाव' की त्रासदी बन गई है। यह 'भटकाव' बड़ी आसानी से उसे शराब, ड्रग्स सेवन एवं अपराध आदि के दुर्व्यसनों में ढ़केल रहा है। ऐसी स्थिति में परिवार के अतिरिक्त उसे सच्चा मार्गदर्शक, विश्वसनीय हितैषी मित्र चाहिए जो 24 घण्टे उपलब्ध हो। इन मानदण्डों पर 100 प्रतिशत खरा उतरने वाला परमात्मा ही हो सकता है, अन्य कोई नहीं।

इसीलिये इस लेख में निराकार, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमेश्वर का अत्यंत संक्षिप्त परिचय और उसकी अपार क्षमताओं से युवावर्ग का परिचय कराने का प्रयास किया है, जिससे वे उसे ही सर्वोच्च हितैषी मित्र मानकर पूर्ण आस्थावान और विश्वासी बने। मुझे बड़ी हार्दिक प्रसन्नता है कि डी. ए. वी. संस्थाएं एवं गुरूकुल इसी विचारधारा के युवावर्ग का निर्माण कर रहे हैं।

स्वामी श्रद्धानंद—दलितोद्धार की वर्तमान में उपयोगिता

-ले० श्री नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20 पंचकूला

अपने गौरवशैली इतिहास को पढ़ने का लाभ तभी है जब हम उससे सीख लेकर वर्तमान में उसकी उपयोगिता समझें। इतिहास की भूलों से सीख लें और संकल्प लें कि काठ की हांड़ी बार-बार आंच पर नहीं चढ़ेगी। यदि हम इतिहास से कुछ सीखते हैं वर्तमान में उसको क्रियान्वित करते हैं तभी अपने भविष्य को उज्जवल कर पाते हैं। आर्य जगत के महामानव देव दयानंद के मानस पुत्र गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली के पुन: स्थापक, शुद्धि आंदोलन के प्रणेता, निर्भीक संन्यासी, प्रखर वक्ता, हिन्दी सेवी, दानवीर, दलितोद्धारक स्वामी श्रद्धानंद जी के जीवन से सबक लेकर यदि वर्तमान सन्दर्भ में दलितोद्धार पर भी आर्य जाति कार्य प्रारम्भ कर दे तो निश्चित रूप से हम अपने समाज को उत्कर्ष की ओर ले जाने में समर्थ होंगे।

वर्तमान समय की समस्या को इतिहास के सभी परिपेक्ष्य में देखने से ही कुछ समाधान कर पायेंगे। वर्तमान समय में भी हमारा हिन्दु समाज जातपात के कबीलों में बंटा आपस में ही लड़ रहा है। विशेष रूप से तथाकथित सवर्ण अगड़ी जातियों विशेष रूप से खुद को मार्शल या लड़ाकी कहलाने वाली जातियां पिछड़ी दलित जातियों पर लगातार अत्याचार करती हैं। समाज में दलित जातियों को उनका उचित स्थान और सम्मान नहीं दिया जाता। आज भी कोई अगड़ी जाति दलितों के साथ सामान्य रूप से रोटी बेटी का संबंध नहीं रखना चाहती। इस सामाजिक विद्वेष के ऐतिहासिक कारणों के साथ-साथ वर्तमान समय में जातिवादी नेताओं की भूमिका भी है। हमारे समाज को जातिवादी कबीलों में बांटकर आपस में लड़वा कर इस लोकतंत्र को भीड़तंत्र बनाकर हमें एक वोट की तरह प्रयोग करके येन केन प्रकारेण सत्ता प्राप्ति इन जातिवादी नेताओं का स्वार्थ है। समाज में जातिवादी विद्वेष संघर्ष, आपसी झगड़ों में बृहत्तर हिन्दू समाज की हानि और इन जातिवादी नेताओं को सत्ता प्राप्ति का लाभ है।

अब इस वर्तमान समस्या को स्वामी श्रद्धानंद के समय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आलोक में देखकर इस समस्या का समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। उस समय ब्रिटिश राज में अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' की नीति कामयाब रही थी। वही नीति आजकल के जातिवादी नेता भी अपना रहे हैं। हम शायद तब भी यह नहीं समझते थे कि हमारे आपसी विद्वेष, संघर्ष और झगड़ों में किसका लाभ और स्वार्थ है और आज भी हम इस बात को नहीं समझ पा रहे। लेकिन उस समय भी दूरदर्शी महामानव स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने देव दयानंद की आर्य मान्यताओं वैदिक सिद्धांतों में इस जातिगत विद्वेष का हल खोजा था और दलितोद्धार की आवश्यकता को समझकर उस पर बल दिया था। स्वामी श्रद्धानंद ने उस समय भी समझ लिया था कि यदि दलितों का उत्पीड़न बंद नहीं हुआ, छुआछूत की समस्या बनी रही और तथाकथित अगड़ी सवर्ण जातियां इनकों दोयम दर्जे का मानती रही तो यह दलित वर्ग अपना घर छोड़कर पराया हो जाएगा और इनका धर्मांतरण या तो जबरन या फिर सेवा के नाम पर राज्य सत्ता के सहारे बहलाकर ईसा या मूसा के धर्मांतरण का नुकसान अंतत: आर्य जाति होगा।

इसी हानि को भांपते हुए स्वामी श्रद्धानंद जी महाराज ने शुद्धि आंदोलन चलाया और शुद्धि की स्थापना करके शुद्धि समाचार के नाम से अखबार शुरू किया। उस समय शुद्धिकरण आंदोलन अपने चरम पर था। स्वामी जी ने धर्मांतरण रोकने और दलितों को उनका सम्मान दिलवाने के उद्देश्य से दलितोद्धार सभा की स्थापना वर्ष 1913 में की और 1921 में स्वामी जी इसके अध्यक्ष बनाए गए। स्वामी जी ने शुद्धिकरण और दलितोद्धार के साथ ही दलितों के जीवन स्तर को उपर उठाने का काम भी शुरू किया। वर्ष 1924 में अहमदाबाद में आयोजित होने वाले कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में महात्मा गांधी को तार से संदेश भेजा। स्वामी जी के लिए अछूतोद्धार की समस्या का सर्वाधिक महत्व था। नागपुर और बारडोली के अधिवेशनों में पारित प्रस्तावों में अस्पृष्यता निवारण की शर्त रखी गई। महात्मा गांधी तो स्वामी जी के विचार से सहमत थे। लेकिन गांधी जी के जेल जाने के बाद कांग्रेस के अन्य नेताओं ने अछूतोद्धार की समस्या से आंखें मूंद ली। स्वामी श्रद्धानंद जी ने 23 मई और 3 जून 1922 को कांग्रेस के महामंत्री विट्ठलभाई पटेल को इस विषय पर पत्र लिखे परंतु कोई संतोषजनक हल नहीं निकला। इन्हीं कारणों और नेताओं की उदासीनता के कारण दलितोद्धार का काम पूरा नहीं हो सकता।

इतिहास से सीख लेकर वर्तमान में हमें सामाजिक तौर पर दलितोद्धार का कार्यक्रम सामाजिक समरसता के रूप में चलाना पड़ेगा। केवल कानून बना देने से इस उद्देश्य की प्राप्ति संभव नहीं है। अपितु इसका कठोरता से पालन सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करना होगा। इसके लिए आर्य समाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद आदि इस विषय पर समान विचारधारा वाली सामाजिक संस्थाओं को अब दलितोद्धार का कार्य वहीं से प्रारंभ करना पड़ेगा जहां स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान के बाद बंद हुआ था। जनता को इस बारे जागरूक करना पड़ेगा और स्वार्थी सत्ता लोलुप नेताओं को जनता के सामने बेनकाब करना पड़ेगा। इसके लिए वर्तमान परिपेक्ष्य में सरकार को भी इन सामाजिक संस्थाओं का सहयोग करना पड़ेगा।

मृत्यु दु:खदायी क्यों है ?

ले०-आचार्य रामसुफल शास्त्री (वैदिक प्रवक्ता)

मृत्यु इतनी भयानक है, डरावनी है कि इससे बाल-वृद्ध-युवा नर-नारी सभी को डर लगता है। इसका कारण क्या है ? और निवारण कैसे हो सकता है। आइये इस विषय पर थोड़ा विचार करें और मृत्यु रूपी भयंकर दु:ख से (वास्तविक तत्व ज्ञान के द्वारा) छुटकारा पा सकें।

मृत्यु दु:ख के दो कारण हैं, मोह और अज्ञान। जब किसी प्रियजन का वियोग हो जाता है, कोई अपना हमसे विछुड़ जाता है, सदा-सदा के लिए हम सबको छोड़कर चला जाता है तब हमें बहुत गहरा दु:ख होता है। जीवन भर एक साथ रहने के कारण एक-दूसरे के साथ मोह होना स्वाभाविक है। यह मृत्यु का मोह रूपी दु:ख है। दूसरा है अज्ञान जिसके कारण मृत्यु दु:ख सताता है। मोह व अज्ञान की निवृत्ति हो जाने पर ही मृत्यु दु:ख से निवृत्ति मिल सकती है। इन दोनों दु:खों के कारणों को समाप्त करने की शक्ति व सामर्थ्य परमपिता प्रभु ही प्रदान कर सकते हैं। इन दोनों के निवारण हो जाने से मनुष्य सुख-दु:ख में समान हो जाता है।

ईश्वर पर पूर्ण श्रद्धा-विश्वास व समर्पण हो जाने पर प्रभु हमें वह बल एवं सामर्थ्य प्रदान कर देगा कि हम न तो सुख में अधिक उतावले होंगे और न अधिक दु:ख-कष्ट आने पर घबरायेंगे। सुख-दु:ख की हमारी स्थिति बिल्कुल बराबर हो जायेगी। अस्तु आइये उस परमपिता परमेश्वर पर पूर्ण आस्था-श्रद्धा व विश्वास के साथ यह सुनिश्चित कर लें कि वह परमात्मा जो हम पुत्र-पुत्रियों के लिए कर्मफल प्रदान करता है वह शत प्रतिशत बिल्कुल पूर्णरूप से ठीक-ठीक ही प्रदान करता है। क्योंकि पिता कभी-भी पुत्रों पर अन्याय नहीं करता।

इस सन्दर्भ में एक बड़ा अच्छा प्रसंग है। जब श्री राम ने बाली का बध कर दिया। बाली की मृत्यु के बाद बाली की पत्नी तारा विलाप करती हुई, रोदन करते-करते मोह के वशीभूत अज्ञान बस श्री राम से कहने लगी कि हे ! राम आपने मेरे पति को क्यों मारा ? तब मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने व्याकुल और अधीर तारा को समझाते हुए कहा कि मैंने बाली को नहीं मारा। आत्मा अजर-अमर अविनाशी है आत्मा को कोई भी नहीं मार सकता। यदि तुम इस शरीर को ही बाली समझती हो तो इसलिए ले जाओ। तब तारा ने कहा कि इस शरीर के अन्दर तो कुछ भी नहीं है, यह तो लोष्ठवत है। फिर महामना श्री राम ने सान्त्वना देते हुए कहा कि-''क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा। पंच रचित यह अधम शरीरा।।'' अर्थात् पंच भूतों से बना शरीर एक न एक दिन इसका विनाश अवश्य होता है, किन्तु असली आत्मारूपी बाली तो अभी भी जीवित है। अत: मैंने बाली को नहीं मारा। तारा का मोह और अज्ञान दूर हुआ। श्री राम के थोड़े से उपदेश मात्र से तारा को वास्तविक ज्ञान हो गया और बाली की पत्नी तारा अपने पति के मृत्यु दु:ख से विमुक्त हो गयी।

बिखरते परिवार-वैदिक समाधान

-डॉ. वेदपाल 30/2, सै. 4, जागृति विहार, मेरठ

अरस्तु का यह कथन कि-'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है' सर्व विद्वज्जन समादृत हैं। सम् उपसर्गपूर्वक अज् धातु से घञ् प्रत्यय होने पर 'समाज' शब्द निष्पन्न होता है, जिसका अभिप्राय: है-मनुष्यों का समुदाय, सभा, मजलिस या गोष्ठी। अप् प्रत्ययान्त 'समज' शब्द मनुष्येतर प्राणियों के समूह का बोधक है। एकाकी मनुष्य का निर्वाह सम्भव नहीं है, उसे किसी अन्य की सहायता अनिवार्यत: अपेक्षित होती है। यह अन्य का सहयोग/सहकार ही समाज का मूल है। इसी सहयोग का निकटतम रूप परिवार है। इसीलिए परिवार को समाज का छोटा ग्रुप या इकाई माना गया है। प्रमुख समाज शास्त्री इ. एस. बोगार्डस (E. S. Bogardus) के अनुसार 'Family is a small social group normally composed of a father, a mother and one or more children.' ऑगबर्न (W. F. Ogburn) और निमकॉफ (M.F. Nimkaff) पति-पत्नी के स्थायी मिलन को परिवार मानते हैं। भले ही उनके कोई सन्तान हो या नहीं। यह कहना समीचीन ही होगा कि समाज की छोटी इकाई परिवार है। सर्गारम्भ में अमैथुनी सृष्टि के अनन्तर पुरुष के साथ स्त्री का सम्बन्ध होने से परिवार अस्तित्व को प्राप्त हुआ। स्त्री-पुरुष के मिथुनीभाव के परिणाम-स्वरूप उनकी सन्तति (पुत्र-पुत्री) उस परिवार के स्थायित्व का आधार हुए। इस प्रकार माता-पिता/पति-पत्नी, सन्तति और सन्तति की सन्तति ये परिवार के घटक हैं। पारिवारिक स्थायित्व की दृष्टि से परिवार के सदस्यों में पारस्परिक सामञ्जस्य का भाव अपेक्षित है।

सम्प्रति परिवार टूटते/बिखरते दिखाई देते हैं। इन टूटते सम्बन्धों के कारण जिस परिवार को स्वर्ग होना चाहिए, आज वही नरक में रूपान्तरित होता दिखाई देता है। पति-पत्नी का सम्बन्ध मूर्त/भौतिक की अपेक्षा अमूर्त, अभौतिक अधिक होना अपेक्षित है। इन सम्बन्धों में अमूर्तता जितनी अधिक व्यापकता लिए होगी मूर्तता (पारस्परिक व्यवहार) उतनी ही सुखद होगी। इस सम्बन्ध शैथिल्य की परिणति निम्न रूपों में दिखाई देती है-

1. विवाह विच्छेद/तलाक
2. क्रूरतापूर्ण व्यवहार/एक दूसरे की हत्या अथवा शारीरिक उत्पीड़न
3. एकात्म व्रत भंग
4. नागरिकता का क्षरण

उपर्युक्त तथा एतादृश समस्याएं परिवार को खोखला किए दे रही हैं। इनका दुष्प्रभाव परिवार के साथ समाज पर भी पड़ता है। साथ ही इन समस्याओं से मुक्त प्रतिवेशी पड़ौसी परिवार भी कहीं न कहीं जाने-अनजाने इनसे प्रभावित होते हैं। इससे स्वस्थ समाज का निर्माण बाधित ही नहीं होता, अपितु ऐसे परिवारों की सन्तति सामाजिकता की बाधक बनती है। इन समस्याओं का मूल वैदिक विवाह विधि में प्रयुक्त तथा गृहस्थ के लिए उपदिष्ट वेद मन्त्र तथा तद्गत भावों की उपेक्षा इसका महत्वपूर्ण कारण है। मन्त्रगत भाव का आचरण ही समस्या का समाधान है। तथा-पारिवारिक कलह का प्रारम्भ अहमहमिकया अर्थात् स्त्री-पुरुष के अपने-अपने अहम् को प्रबल मानने से होता है। इससे उत्पन्न पृथक्करण (Separation) विवाह विच्छेद (Divorce) तलाक तक पहुंचता है। निम्न मन्त्र/मन्त्रांश का भाव हृद्गत करने पर अहमहमिका के भाव को कहीं अवसर नहीं मिलता है-

समञ्जन्तु विश्वेदेवा: समापो हृदयानि नौ। विवाह के समय स्त्री व पुरुष जब एक दूसरे के साथ विवाहित होने के निश्चय के साथ अग्नि परमेश्वर, विद्वज्जनों, सामाजिक वृद्धों के समक्ष अपने पृथक्, अस्तित्व को मिटाकर इस प्रकार एकाकार होते हैं, जिस प्रकार दो स्थान का जल मिलकर एकाकार हो जाता है। दो स्थान के जल को एक साथ मिला देने पर पुन: उसे उसी रूप में गुणात्मक/स्वरूपात्मक दृष्टि से पृथक् करना सम्भव नहीं होता है। इसी प्रकार-

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथास:।

पत्नी त्वमसि धर्मणाहं गृहपतिस्तवं।

ममेयमस्तु पोष्या महचं त्वादाद् बृहस्पति:।

मया पत्या प्रजावति शं जीव शरद: शतम्।।

उक्त मन्त्रों में पाणिग्रहण विवाह का प्रयोजन सौभाग्य तथा पाणिग्रहण की अवधि जरदष्टि शब्द द्वारा निर्धारित कर दी गयी है। साथ ही पुरुष द्वारा पोषण का दायित्व यावज्जीवन निर्वहन का संकल्प विवाह की परिणति परिवार को स्थायित्व प्रदान करने का सुन्दर निदर्शन है। इसी प्रकार एक अन्य मन्त्र में सम्पूर्ण आयु जीवनभर पुत्र-पौत्रों तथा नातियों के साथ आनन्दपूर्वक रहने, क्रीड़ा करने का सन्देश है-

इहैव स्तं मा वियौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।

क्रीडन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।।

पारिवारिक विघटन के मूल में विवाह के उद्देश्य का बदल जाना भी महत्त्वपूर्ण है। वैदिक दृष्टि में महत्त्वपूर्ण प्रयोजन धर्मकृत्य की पूर्ति है। सन्तति महत्त्वपूर्ण होते हुए भी प्रथम स्थानी नहीं है, किन्तु स्मृतिकाल में धर्म तृतीय तथा सन्तति द्वितीय स्थानी हो गए। प्रथम स्थान रति को प्राप्त हुआ। विवाह विच्छेद के दृश्यमान अनेक कारणों में स्त्री के शारीरिक सौन्दर्य, जिसमें उसके ब्राह्य अंग, उसके बोलने का प्रकार, शैली, आचरण तथा शारीरिक रोग भी महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं। वैदिक दृष्टि से विवाह में सम्पाद्य प्रधान होम के छहों मन्त्रों में इन सबका उल्लेख है। पुरुष वर आहुति देते हुए कहता है-

लेखा सन्धिषु पक्ष्मस्वावर्तेषु च यानि ते।

तानि ते पूर्णाहुत्या, सर्वाणि शमयाम्यहं स्वाहा।

इदंकन्यायौ इदन्न मम

केशेषु यच्च पापकमीक्षिते रुदिते च यत्।

शीलेषु यच्च पापकं भाषिते हिसते च यत्।

आरोकेषु दन्तेषु हस्तयो: पादयोश्च यत्।

ऊर्वोरुपस्थे जङ्घयो: सन्धानेषु च यानि ते।

यानि कानि च घोराणि सर्वांगेषु तवाभवन्।

पूर्णाहुतिभिराज्यस्य सर्वाणि तान्यशीशमं स्वाहा।

मन्त्रोक्त भावों की उपेक्षाकर मात्र रति को ही प्रमुख मानने के कारण पारिवारिक विघटन के अनेक उदाहरण प्रतिदिन दृष्टिगत होते हैं। इनमें से कुछेक ऐसे भी होते हैं जो सप्ताह या महीनों तक चर्चा में होते हैं किन्तु इनकी दु:खद परिणति क्या किसी से छिपी है। चन्द्रमोहन उर्फ चांद मोहम्मद (हरियाणा के उपमुख्यमंत्री) जिन्हें इस कारण बर्खास्त कर दिया गया तथा अनुराधा बाली उर्फ फिजा (अपर महाधिवक्ता हरियाणा) के विवाह के अन्त तथा फिजा की मृत्यु तक का घटनाक्रम क्या कोई सन्देश नहीं दे रहा ?

क्रूरतापूर्ण व्यवहार-यह वैवाहिक तथा विवाहेतर दोनों ही सम्बन्धों में बढ़ रहा है। वैवाहिक सम्बन्धों में इसके बढ़ने के मूल के प्रमुख कारणों से एक है-दहेज के माध्यम से बढ़ती लालच प्रवृत्ति। इस कारण शारीरिक उत्पीड़न से हत्या तक की घटनाएं दृष्टिगत होती हैं। यदि विवाह के समय की गई प्रतिज्ञा 'ममेयमस्तु पोष्या' तथा 'अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्य: सुमना: सुवर्चा:। एवं 'प्र में पतियान: पन्था: कल्पता शिवा अरिष्टा पतिलोकं गमेयम्'। इसके अतिरिक्त स्त्री-पुरुष का एकात्मव्रत का अतिक्रमण भी अनेक ऐसी घटनाओं का जनक देखा गया है। साथ ही परिवार में किसी वरिष्ठ सदस्य की अनुपस्थिति अथवा उनका महत्त्वहीन होना भी ऐसी प्रवृत्तियों के बढ़ने में सहायक कहा जा सकता है।

विवाहेतर सम्बन्धों में बढ़ती क्रूरता के पीछे पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादाओं का टूटना, स्वच्छन्द यौनाचार की बढ़ती प्रवृत्ति, इसके उत्प्रेरक रूप में सहमति से यौन सम्बन्ध स्थापित करने की अनुमति तथा लिव इन रिलेशन (इस विषय पर सुप्रीम कोर्ट द्वारा राधा-कृष्ण के सम्बन्धों को लेकर की गई टिप्पणी तथा उस टिप्पणी पर हिन्दू धर्माचार्यों का मौन) जैसे बिन्दु भी हैं। इन

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 6 का शेष-बिखरते परिवार-वैदिक समाधान

सम्बन्धों में क्रूरता है तो इसे) को क्रूरतम कहना उचित होगा। इसके उदाहरण हैं-

1. दिल्ली का तन्दूर काण्ड- इसमें नैना साहनी को तन्दूर में जलाया गया आरोपी सुशील शर्मा। (इसे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आजीवन कारावास की सजा दी गई है।)

2. 2012 का दिल्ली बस में हुआ गैंग रेप (इसमें दामिनी काल्पनिक नाम)

3. तेजाब फैंककर चेहरे को विकृत कर देने की अनेक घटनाएं।

4. अबोध बालिकाओं के साथ होने वाले दुराचार।

वैदिक साहित्य में प्रदत्त संयम, मर्यादित्त आचरण की शिक्षा, स्वच्छन्द यौनाचार की पूर्ण अननुमन्यता तथा लिव इन रिलेशन जैसे उत्तरदायित्व विहीन आचरण को हतोत्साहित किया जाना ही सार्थक पहल हो सकती है।

एकात्मव्रत-पति द्वारा पूर्णतः पत्नी तथा पत्नी द्वारा पूर्णरूपेण शारीरिक, मानसिक रूप से समर्पित होना एकात्मव्रत कहा जा सकता है। इस व्रत के न मानने के फलस्वरूप वाइफ स्वैपिंग गेम तथा ग्रुप सैक्स जैसी प्रवृत्तियां परिवारों को विघटित कर रही हैं। वैदिक सन्देश-

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु।
मम वाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम।।

परिवारों की रक्षा वर्ण संकरता दोष का निवारक हो सकता है। मनुष्य के समाजीकरण की प्रक्रिया परिवार से प्रारम्भ होती है। सभ्य एवं सुसंस्कृत परिवार में ही बच्चा सामाजिकता का पाठ पढ़ता है। कलहपूर्ण विघटित परिवार के बच्चें कहीं न कहीं असामाजिक कार्यव्यापार में प्रवृत्त हो जाते हैं। अतः अच्छे समाज के लिए अच्छा परिवार अपेक्षित है। प्रायः परिवार में पाई जाने वाली सभी विसंगतियां वैदिक सन्देश से दूर की जा सकती हैं।

डॉ. सुदर्शन देव आचार्य जी वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत

आर्य जगत् के उदीयमान युवा वैदिक विद्वान्, ओजस्वी वक्ता, विभिन्न संस्थाओं के मार्गदर्शक, ओड़िया भाषा के अनेक पुस्तकों के सम्पादक तथा कुशल लेखक, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट ओड़िया प्रदेश के संगठन मन्त्री, गुरुकुल हरिपुर, जुनानी जि. नुआपड़ा (ओड़िशा) के सफल संचालक पूज्य आचार्य डॉ. सुदर्शन देव जी को परोपकारिणी सभा ऋषि उद्यान अजमेर में 133वां महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह 4,5,6 नवम्बर 2016 के पावन अवसर पर डॉ. प्रियव्रतदास वेद वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इस पुरस्कार में 21,000/-की नगद राशि शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया।

पूज्य आचार्य जी सादा जीवन उच्च विचारों के आदर्श त्यागी तपस्वी एवं साधक प्रवृत्ति के हैं, आपकी प्रेरणा से अब तक शताधिक आदर्श दैनिक अग्निहोत्री परिवार तैयार हुये हैं तथा सत्तर के लगभग आदर्श गृहस्थियों को वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित कराके अनेक संस्थाओं में सेवा के लिये नियुक्त किये हैं तथा अनेक ब्रह्मचारी आपकी प्रेरणा व मार्गदर्शन में अध्ययनरत तथा विविध क्षेत्रों में सेवारत हैं।

-गुरुकुल हरिपुर, जुनानी

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

वैदिक ज्ञान परीक्षा-2016 परिणाम घोषित

वैदिक शिक्षा परिषद् फाजिलका द्वारा 25 अक्तूबर, 2016 को प्राइमरी, मिडिल, मैट्रिक, सेकण्डरी और कॉलेज स्तरीय पांच ग्रुपों में आयोजित वैदिक ज्ञान परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया। इसमें 19 स्कूल और 3 कालेजों के 1300 छात्र/छात्राएं सम्मिलित हुए। परीक्षा संयोजक वेदप्रकाश शास्त्री के अनुसार इस परीक्षा का मुख्य उद्देश्य वैदिक सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्रीयता, चरित्रनिर्माण और परस्पर सौहार्द की भावना जागृत करना है।

प्राइमरी ग्रुप में स्वामी दयानन्द माडल स्कूल का पीयूष प्रथम, डी. एम. पब्लिक स्कूल की कीर्ति द्वितीय तथा चाणक्य स्कूल की भावना का सवान, डी. ए. वी. शताब्दी स्कूल की सोनम और स्वामी दयानन्द माडल स्कूल का विनय तीनों ही तृतीय स्थान पर रहे।

मिडल ग्रुप में सर्वहितकारी विद्यामंदिर की गीतिका और एस डी. माडल हाई स्कूल की महकप्रीत कौर दोनों प्रथम, रेनबो डे बोर्डिंग स्कूल की गोमसी द्वितीय तथा डी. ए. वी. शताब्दी स्कूल का चन्द्रमान तृतीय स्थान पर रहा है।

मैट्रिक ग्रुप में चाणक्य स्कूल के विक्रम ने प्रथम, स्वामी दयानन्द माडल स्कूल के जोगिन्द्र ने द्वितीय तथा सरकारी माडल सी. सै. स्कूल कौड़ियांवाली की फिजा, एस. डी. सी. से. स्कूल की खुशबू और चाणक्य स्कूल की प्रेरणा इन तीनों ने ही तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सेकण्डरी ग्रुप में सरकारी माडल सी. सै. स्कूल कौड़ियांवाली के मानिक ने प्रथम और इसी स्कूल की पल्लवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। एस. डी. सी. सै. स्कूल की अर्पनदीप भी द्वितीय स्थान पर रही। तृतीय स्थान सरकारी माडल सी. सै. स्कूल कौड़ियांवाली के लविश अरोड़ा ने प्राप्त किया।

कालेज स्तर पर बी. ए. ग्रुप में गोपीचन्द महिला कालेज अबोहर की प्राक्षी ने प्रथम, चंचल ने द्वितीय और साक्षी जुनेजा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

ई. टी. टी. ग्रुप में ज्योति बी. एड. कालेज फाजिलका की कविता प्रथम, डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर की नवदीप और द्वितीय तथा तमन्ना तृतीय स्थान पर रहीं।

बी. एड. ग्रुप में डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर की शिवांगी प्रथम रही। इसी कालेज की अंकिता लकेसर, शिवानी, अनामिका यह तीनों द्वितीय स्थान पर रहीं। तृतीय स्थान इसी कालेज की तनुजा ने प्राप्त किया।

एम. एड. ग्रुप में डी. ए. वी. शिक्षा महाविद्यालय अबोहर के रविकुमार प्रथम, स्वीटी राज द्वितीय, शिल्पा सेतिया तथा शबनम दोनों तृतीय स्थान पर रहे।

शास्त्री जी ने परीक्षा में सहभागी सभी विद्यालय, महा-विद्यालय के प्रमुखों, पर्यवेक्षकों, सहयोगी शिक्षकों के प्रति सहयोगार्थ हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए छात्र-छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

वेद प्रचार दिवस आयोजित

आर्य समाज गौशाला रोड़, फगवाड़ा के तत्त्वावधान में 25 दिसम्बर 2016 दिन रविवार सुबह 8:30 बजे से 11 बजे तक आर्य माडल सी. सै. स्कूल, गौशाला रोड़, फगवाड़ा के प्रांगण में स्व. मास्टर मनोहर लाल चोपड़ा जी की पुण्य स्मृति में **वेद प्रचार दिवस** का आयोजन किया जा रहा है जिसमें एस. डी. कालेज फार विमैन जालंधर के संस्कृत विभाग की रिटायर्ड अध्यक्षा, मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित, उपनिषदों की प्रबुद्ध विदुषी प्रोफैसर सरला भारद्वाज वर्तमान परिस्थितियों में उपनिषदों का जीवन दर्शन विषय पर मार्गदर्शन देंगी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक **अरूण वेदालंकार** भजन संगीत के माध्यम से भजनोपदेश करेंगे। आप सब से अनुरोध कार्यक्रम में शामिल होकर पुण्य के भागी बनें।

वेदवाणी

प्रभो ! हमारे साथी बनो

त्वां जनां मम सत्येष्विन्द्र सन्तस्थाना वि ह्वयन्ते समीके।
अत्रा युज कृणुते यो हविष्मान् ना सुन्वता सख्यं वष्टि शूरः।।

-ऋ० १०/४२/४; अथर्व० २०/८९/४

*ऋषिः-**कृष्णः**।। देवताः-**इन्द्रः**।। छन्दः-**पादनिचृत्त्रिष्टुप्**।।*

***विनय-**हे परमेश्वर ! केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु साहित्यिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक सभी क्षेत्रों में मनुष्य दो पक्षों में विभक्त हुए परस्पर संघर्ष कर रहे हैं और मज़ेदार बात यह है कि इन कलहों, युद्धों में दोनों पक्ष वाले तुम्हारे पवित्र नाम की दुहाई दे रहे हैं। प्रत्येक कहता है कि "हमारा पक्ष सच्चा है, अतः परमेश्वर हमारे साथ है, विजय हमारी निश्चित है।' परन्तु हे मनुष्यो ! सत्य के साथ ऐसा खिलवाड़ मत करो। तनिक अपने अन्दर घुसकर, अन्तर्मुख होकर, अपनी सच्ची अवस्था को देखो। 'सत्य', 'परमेश्वर' आदि परम पवित्र शब्दों का यूँ ही हलकेपन से उच्चारण करना ठीक नहीं है। यह पाप है ? गहराई में घुसकर, गहरे पानी में बैठकर, सत्य वस्तु को तत्परता के साथ खोजो और देखो कि वह सत्यस्वरूप इन्द्र सदा सच्चे (वास्तविक) सत्य का ही सहायक है। इस संसार में जो लोग हाथ में "हविः" लिये खड़े हैं, आत्म-बलिदान चढ़ाने को उद्यत हैं, अपना सिर हथेली पर रखे फिरते हैं, उन त्यागी पुरुषों को ही वे परमेश्वर अपना साथी बनाते हैं, उन्हीं के वे सहायक होते हैं, क्योंकि यह ही सच्चे होने की सच्ची पहचान है। जिसको वास्तव में सत्य से प्रेम है वह तो उस सत्य के लिए सिर पर कफ़न बाँध लेता है। सत्य का सच्चा पुजारी तो भंगुर शरीर की क्या, संसारभर की अन्य सब असत्य, असर वस्तुओं की बलि चढ़ाकर भी सत्य की रक्षा करता है, अतः उसे ही उस शूर, महापराक्रमी, सर्वशक्तिमान् इन्द्र की मित्रता (सख्य) और सहायता प्राप्त होती है। यदि उस शूर की मित्रता चाहते हो तो 'हविष्मान्' और सवन करने वाले बनो। जो 'असुन्वत्' है, जो यज्ञ के लिए उद्योग करता हुआ सोम का सवन नहीं करता-कठोर परिश्रम करता हुआ सार वस्तु का, सत्य का, तत्त्व का निष्पादन नहीं करता-ऐसे पुरुष के साथ वे इन्द्र कभी मित्रता नहीं करना चाहते, अतः हे भाइयो ! ढोंग करना छोड़ दो ? सत्य कभी छिपेगा नहीं। जब तुममें सच्चाई होगी तो उसके लिए सब-कुछ त्याग करने को अवश्य तैयार होंगे और तुममें आगे-आगे सत्य-रस को, तत्त्व-सार को निकाल प्राप्त करने की उत्कट लगन भी होगी और तब तुम देखोगे कि तुम्हें वह परम सौभाग्य प्राप्त है कि तुम शूर सर्वशक्तिमान् इन्द्र की मित्रता में हो, उसके 'युज्' = साथी बने हुए हो।*

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

–प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्यवनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट, रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे, मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व थकान में अत्यंत उपयोगी।

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।